[Social Issues and Environmental Problems,Vol.3 (Iss.9:SE): Sep, 2015] ISSN- 2350-0530(O) ISSN- 2394-3629(P)
Impact Factor: 2.035 (I2OR)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i9SE.2015.3258

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

बी.एड. महाविद्यालय के विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

सुनीता श्रीवास्तव
मातुश्री अहिल्यादेवी टीचर्स एज्युकेशन इंस्टीट्यूट, सुल्लाखेड़ी, इन्दौर

सारांश
प्रस्तुत अध्ययन बी.एड. महाविद्यालयों के छात्र/छात्राओं की पर्यावरणीय जागरूकता पर तुलनात्मक अध्ययन किया गया । अध्ययन के अंतर्गत 40 छात्र एवं 40 छात्राओं का चयन किया गया । सर्वेक्षण विधि स्वनिर्मित प्रश्नावली का उपयोग करते हुए उपर्युक्त दोनों समूह का पर्यावरण जागरूकता का मापन किया गया । अध्ययन से प्राप्त परिणामों से स्पष्ट होता है कि कला समूह एवं विज्ञान समूह छात्रों में पर्यावरणीय जागरूकता में सार्थक अंतर पाया जाता है ।

प्रस्तावना
मानव एक सामाजिक प्राणी है । अतः उसका परिवार एवं समाज से घनिष्ठ संबंध होता है पर्यावरण का अर्थ है वातारण जिसमें संपूर्ण प्रकृति, नदियां, जलाशय, वन, उपवन, वाटिका, झरने, पर्वतश्रृखंलाऐं, चट्टाने, खनिज, पेड़–पौधे, वायु एवं जल का संयोग आता है । मनुष्य पर्यावरण में ही सांसे ले रहा है । अतः शुद्ध पर्यावरण की अत्यंत आवश्यकता है । प्रकृति का क्षेत्र अत्यंत विस्तृत तथा रहस्यपूर्ण है जो कि पर्यावरण के साथ जुड़ा हुआ है वह प्राकृतिक घटनाओं का ज्ञान तथा उसके कारण ढूढंता है । प्राकृतिक वन संपदा प्राकृतिक स्तर पर एक मनोहर रूप प्रस्तुत करती है । खेत–बगीचे, झरने, नदी, वाटिकाऐं एवं विभिन्न जीव–जन्तु आदि सभी इस पर्यावरण को सुन्दर और स्वच्छ बनाते है । बालक प्रकृति की गोद में जाकर प्राकृतिक दृश्यों का बोध करता है और निरीक्षण कर उन्हें समझ लेता है । आजकल प्राथमिक स्तर पर युनिसेफ ने एक योजना पर्यावरणीय शिक्षा विद्यालयों में प्रांरभ कर दी है इसके द्वारा छात्रों को शिक्षण दिया जाता है । यह शिक्षण अपव्यय नहीं है प्राथमिक स्तर पर छात्रों को प्रकृति के रहस्य का बोध एक अन्वेक्षणकर्ता के रूप में करना चाहिए ।
पर्यावरण उन सम्पूर्ण शक्तियों, परिस्थितियों एवं वस्तुओं का योग है जो मानव को परावृत करती है तथा उसके क्रियाकलापों को अनुशासित करती है ।
हमें अपने अस्तित्व के रख–रखाव के लिए अपनी इस जननी की हर प्रकार से रक्षा करनी होगी । इतिहास साक्षी है कि मानव के क्रूर हाथों से सम्पन्न हुई विनाश लीला में कितने ही जीव प्रजातियाँ नष्ट हो गई और कई नष्ट होने की कगार पर है । मानव अपने मनोरंजन एवं लालच की पूर्ति हेतु कई जानवरों का शिकार करताइ है जिससे प्रकृति का संतुलन बिगड़ गया है । 19 वीं व 20 वीं शताब्दी में हुए सभ्यता एवं औद्योगिकरण के तेज प्रसार के कारण पक्षी जगत भी प्रभावित हुए । यूरोप, अमेरिका, अफ्रीका तथा एशिया के महाद्वीपों में लाखों हेक्टीयर भूमि पर से वनों का अविवेकपूर्ण कटाव हुआ नये वन बहुत कम लगाये गये या लगाये ही नही गये । पक्षीयों, प्राणियों एवं वनस्पतियों की कई प्रजातियां लुप्त हो गई । अतः पर्यावरण के प्रति सम्पूर्ण विश्व में चेतना जागृत होना अनिवार्य है । प्रकृति में संतुलन बनाये रखना मानव का परम् कर्त्तव्य है । मति भ्रम के कारण मानव यह दम्भ करने लगा है कि उसने प्रकृति पर विजय प्राप्त कर ली है परन्तु यह समझना उसकी सबसे बड़ी भूल है । वह अपने निवास एवं कार्यालय में वातानुकूलित उपकरण लगाकर यह सोचने लगा है कि उसने प्रकृति को जीत लिया है वह जलवायु से स्वतंत्र है परन्तु वास्तविकता यह नहीं है उसे अपने निकटस्थ वनस्पति एवं प्राणाजगत को वातानुकूलित एंव सुसज्जित करना होगा । प्रकृति में संतुलन

बनाये रखने के लिए प्रदूषण पर नियंत्रण करना होगा तभी वह भावी पीढ़ी को एक स्वच्छ पर्यावरण दे सकेगें वरना आने वाली पीढ़ी के लिए स्वच्छ पर्यावरण एक कल्पना मात्र रह जायेगा ।

उद्देश्य

(1) बी.एड. महाविद्यालय स्तर के विज्ञान एवं कला समूह के विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता की तुलना करना।
(2) बी.एड. महाविद्यालय स्तर के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरणीय जागरूकता की तुलना करना ।

परिकल्पना

(1) बी.एड. महाविद्यालय के विज्ञान एवं कला समूह के विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता के माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं ।
(2) बी.एड. महाविद्यालय स्तर के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरणीय जागरूकता के माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं ।

परिसीमन

प्रस्तुत शोध कार्य में न्यादर्श का चयन इन्दौर के बी.एड. महाविद्यालय के विद्यार्थियों पर किया गया है । इसके लिए बी.एड. महाविद्यालय से 40 छात्र तथा 40 छात्राओं का चयन किया गया जिसमें कला तथा विज्ञान समूह के विद्यार्थियों को समान रूप से सम्मिलित किया गया है ।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध हेतु यादृच्छिक न्यादर्श का प्रयोग किया गया है ।

विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन सर्वेक्षण विधि द्वारा किया गया है ।

उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु प्रदत्तों का संकलन स्वनिर्मित पर्यावरणीय जागरूकता प्रश्नावली द्वारा किया गया है।

सांख्यिकीय प्रविधि

संकलित प्रदत्तो का विश्लेषण के लिए 'टी' टेस्ट व मानक विचलन (SD) सांख्यिकीय का प्रयोग किया गया है ।

परिणाम व विवेचना

वर्गवार मानक विचलन तथा 'टी' मूल्य पर्यावरण जागरूकता के माध्य फलांकों की तुलना –

सारणी संख्या – 01

संक्रं	न्यादर्श	N	M	S.D.	t का मान
01	विज्ञान समूह	40	57.35	7.79	0.31
02	कला समूह	40	56.78	7.54	

सांरणी संख्या 1 का विश्लेषण करने से ज्ञात होता है कि उद्देश्य की शून्य परिकल्पना हेतु 'टी' का मान 0. 31 है जो कि स्वतंत्रता 78 के साथ सार्थकता के स्तर .05 पर सार्थक नहीं है । अर्थात विज्ञान समूह एवं कला समूह के विद्यार्थियों के माध्य फलांकों में सार्थक अन्तर नहीं है ।

अतः शून्य परिकल्पना बी.एड. महाविद्यालय के विज्ञान एवं कला समूह के विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता के माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं । स्वीकार की जाती है, निष्कर्षतः कहा जाता है कि विज्ञान समूह एवं कला समूह के विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरूकता समान रूप से है ।

वर्गवार मानक विचलन तथा 'टी' मूल्य छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण जागरूकता के माध्य फलांकों की तुलना –

सारणी संख्या – 02

सं.क्रं	न्यादर्श	N	M	`ण्क्ए	t का मान
01	कुल छात्र	80	50.13	11.36	0.51
02	कुल छात्राएँ	80	51.14	11.57	

सांरणी संख्या 2 का विश्लेषण करने से ज्ञात होता है कि 'टी' का मान 0.51 है जो कि स्वतंत्रता के अंश 78 के साथ सार्थकता के स्तर पर 0.5 पर सार्थक नहीं अर्थात छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरणीय जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है । अतः शून्य परिकल्पना बी.एड. महाविद्यालय स्तर के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरणीय जागरूकता के माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं स्वीकार की जाती है । निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरणीय जागरूकता भिन्न नहीं है ।

शोध के निष्कर्ष

(1) विज्ञान समुह के विद्यार्थियों का व कला समूह के विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है ।

(2) बी.एड. महाविद्यालय के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरणीय जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है ।

सुझाव

1) प्रत्येक विद्यार्थियों को पर्यावरण क्लब का सदस्य बनाना चाहिए ।
2) विद्यार्थियों को पर्यावरण से संबंधित प्रतियोगिता में भाग लेना चाहिए ।
3) विद्यार्थियों को अपने महाविद्यालय में उपस्थित जीव–जन्तु तथा पादप संरक्षण करना चाहिए ।
4) विद्यार्थियों को वृक्षों एवं जीवों का महत्व समझाते हुए उन्हें पर्यावरण संरक्षण के लिये प्रोत्साहित करना चाहिए ।

सन्दर्भ

1. *Buch, M.B. "Fourth Survey of Researhc in Education" NCERT (1983) 191*
2. *गर्ग. राजीव, ''पर्यावरण शिक्षा'', अभिराम प्रकाशन, नई दिल्ली–1*
3. *कपिल. एच.के., ''अनुसंधान विधियां'', हरप्रसाद भार्गव, आगरा*
4. *शर्मा. डॉ.टी.सी., ''पर्यावरण शिक्षा''(2008) रजत प्रकाशन, नई दिल्ली,*
5. *सती. विश्रम्भ प्रसाद, ''पर्यावरण और कानून'', आविष्कार पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, जयपुर (राजस्थान)*
6. *श्रीवास्तव. डी.एन., अनुसंधान विधियां, साहित्य प्रकाशन, आगरा*
7. *व्यास, हरिशचन्द्र, ''पर्यावरण शिक्षा'', पब्लिकेशन विद्याविहार, नई दिल्ली*